

Sh. D.

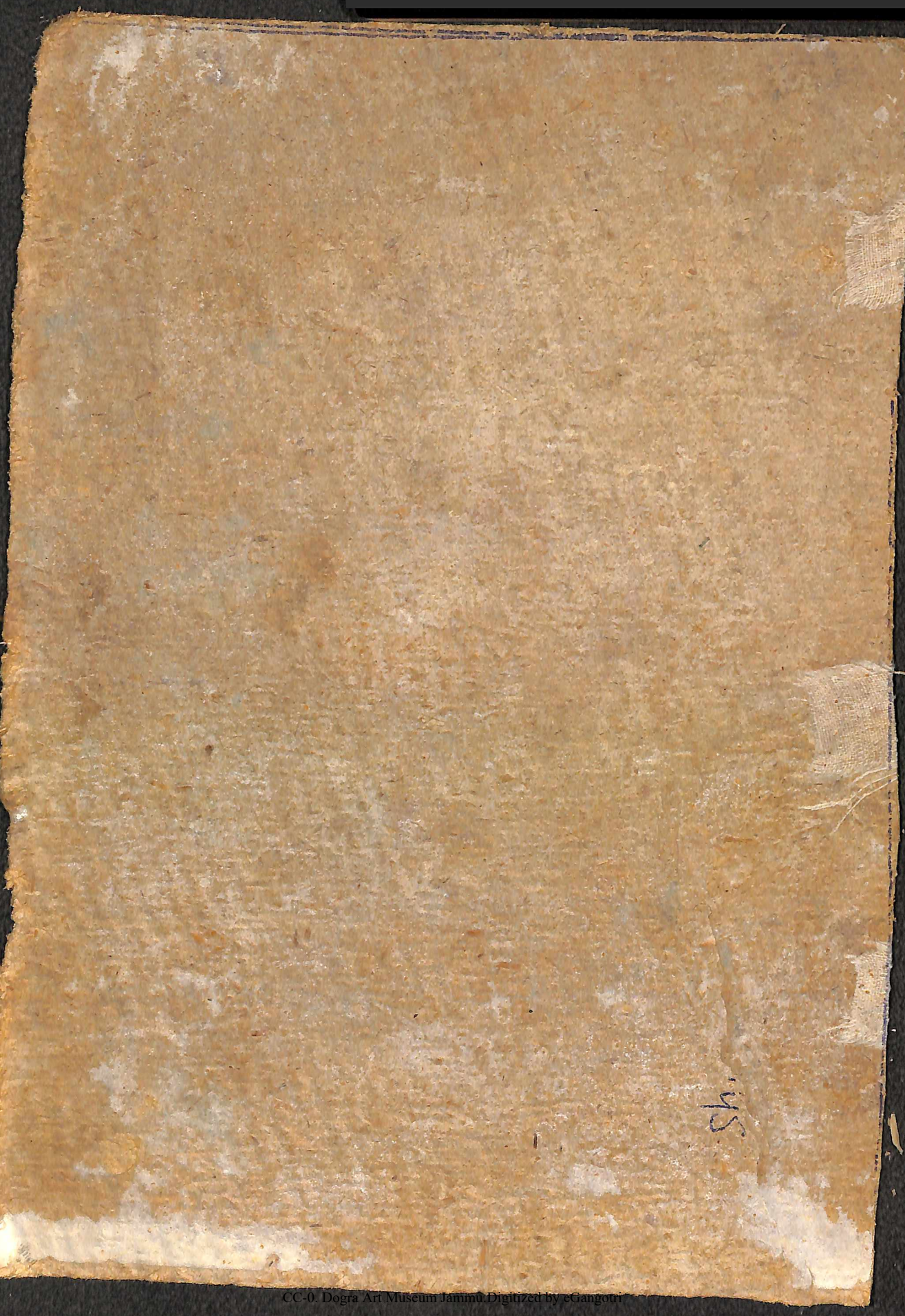
No. 11

11
483

वैष्णवचयनशास्त्र
मंत्रशास्त्र

unpublished

No = 11



७
३

यंमिपिवादनमा धामदभुंति
 क्रुष्टमप्रलयैरुवभिद्विभा
 वलमप्रपुनयंमपादलेभि
 नवदनमा धेनुगैरुभापे
 मापिकलापिप्रभकरायभा
 भेदपाष्टकभक्तपुनरुननरुने
 वने विरायैवेगवृवनेव
 रुद्रवनेभनभा विश्वक

मउरुधधुमधुधुमउरु
 धुमठतिउः प्रलयैउत
 प्रदसंमरुठतिमभुति
 उः मरुःधधुमधुमपेन
 पदनेसुमभा वभुजुन
 लकीप्रगभोलिठिस्त्रविडा
 नकैः ठरुठैरुपेपसुम
 धुमभैसुमभैः धान

कैः कलप्रलैषु निमैश्वर्यम्
 किमुषा गङ्गाकुरुङ्गाङ्गा
 यंमोमैलङ्गाङ्गाङ्गा
 प्रयागङ्गाङ्गाङ्गाङ्गा
 विकटङ्गाङ्गाङ्गाङ्गा
 काङ्गाङ्गाङ्गाङ्गाङ्गा
 राङ्गाङ्गाङ्गाङ्गाङ्गा
 मङ्गाङ्गाङ्गाङ्गाङ्गा

७
 ७
 २

No 8

॥ पस्मिभामिक छडीयास ॥ सतुजीमेतुग
 भडा ॥ कुचामिहं सभाकुमिः ॥ धधुतेमिकू
 कीडिडा ॥ ०३ ॥ सधुममभा ॥ नि ॥ नठि
 शुभनीसुगः ॥ एगसुगीं भाविह ॥ सुकम
 भमरतुर ॥ सुनेसुमंमिहमयं ॥ उमसाधु
 भकलेध ॥ राधवेह यमभुंउ ॥ कलेमसु

मंउममभउविनायकभा
 सकममंग ॥ पडिंमममंभ
 उनायकभा ॥ प०उममउय
 मुगल्लमभुवभउमभा ॥ पूर
 जीलठउपुइपनाजीविपुल
 पनभा ॥ ठदजीलठउठदंभ
 काजीपमंपमभा ॥ मभपेसु
 कउसुकपिलेगएकरक

पि॥
३

द्वयं तस्य ॥ मिश्र एतन्नि म चानि ॥ वरु भयिः
भदरुतिः भीमं मा लकं उष्ट्रं सुक्ष्मं च
वले सुतिः ॥ ०५ ॥ इन्द्र प्र प्र साप न कु
विष्णु गङ्गा प्र कीर्तिः ॥ उष्ट्रः प्र कु मगीरं
म सुं वेम तु सं श्लि उं ॥ ०६ ॥ सुतदा भीमिवः
भाको इ च सु कु कु मापः ॥ म मगीरु मा

पु.
मु.
३

लक्ष्मण सुविकटो विष्णु न मे
गच्छति प्रभुं दुन प्रभुं
उल मङ्गे गणनः दुःख मे
ज्ञानिना भानि गल्ल मभु मभा
दिताः या भव सु ग या दु
धि मल हं द्वि द्वि भु उ मभा
विष्णु भु विवा हं म प्र व म
नित म डा व भद्रु म भद्रु

वित्री॥ विटमेरु करुभात्र यमसुमुत्तु
 लै० उ॥ साकुएत्रपूरुमके॥ ऊऊरुमेम
 गुहमे॥ बाधलमउषैवम॥ कटि पूरुमे
 नरुमे॥ ए००३भुनयेह मि कहेमवम
 रुनेउले॥ नमिक यं ममकधेः॥ कूवेनष्ट
 ललाटम॥ प्रचवरुं उषैवम॥ रुकिल पमि

एमेवविभुपुभुनसयउ सु
 लाभु० पंगविभुममिवरुंमउ
 ऊरुभा प्रभत्रवमनंष्टयेऊ
 वविभेपमात्रय मरिप्री
 उऊमिहुअंप्रिउयेऊरै
 पि भवविभुनभुमैगपु
 रिपउयेनभः ग००३मभि
 पमैरुंगरावऊंभिलेमनः

जिसे
+

मेमेव॥ उषैवकृद्मेतु भाः॥ १॥ उतुगेसउषा
 अवि॥ हामः॥ मश्रुकीडितः प्रथमसुम
 ककरो॥ द्वितीयः सुभापवदि॥ उडियः
 ॥ पिङ्गल॥ प्रेङ्ग सुतुके भनिभतुभाः॥ उंरु
 वीनीलममप्रणः॥ पञ्चमः पवकः॥ प्रु ११
 पधुवकिप्रुठ उरु॥ द्विपुमसा॥ विवल्कः

पु.
मु.
र

प्रभवेभरुवेविवरंगडाविक
 यकः मिममिडुमगभीर
 गभगभपमिडिडभा गक
 नकमभसुमेवनेमेवगल
 सुगभा श्रीभसुगडसम
 मरुगसुगलप्रउंपमये
 नेभयाप्रुठ उरुकंकीडिय
 धामिमुडंपममरुठभा

विदुः सुत्वनिः भा क॥ मधुगः॥ परिठपितः॥
 नवमशुगकवले॥ ममगः॥ दधु वलकः॥ उदु
 ॐ गुरुगोरकः॥ माभशु दगः॥ शुतः॥ सुत
 वलः॥ पैवलेः॥ पीउवलः॥ पद्मगपूकः॥
 पउदुगः॥ मसिमसुमः॥ पादुगपामेभतः॥
 ॐ कुनीलमभेभव॥ गैगुमममसुत॥ शु

रमभइ॥ गगभगभइ
 मे भकथवेविउधकं॥
 मिउऊदेभदेइउभा कलपं
 यभनगीउभुनंगभभन
 किफिउयभगकेउलक
 यंउविाकीधभा कलि
 न्देन॥ मेवगवरेमभभवि
 उभा चभुगीसंडापरेउमी

सिरी ५
५

॥ द्याः अदमत्रिः ॥ नीले इलमल ५ष्टि व
लमुद्रागमुषा ॥ मङ्गकुळे कुवलठः ॥ भा
रुमुलः ॥ पाः ५७ उः ॥ उदुगे मीपमकुमः
रुभमुलः ॥ ५की उता ॥ १३ ॥ केमिमुलः
मुभविमुभदपाउकनामनः ॥ उयपाउ
कपाउने वलके मनवा एकः ॥ १७ ॥ केम

७.
७
१

नीधुत्रिधुपायभा वदुद
मुकेभलेधुमि ॥ उधुलेदि
उभा कुलेदेउकगंमैवमष्ट
रुमे ५की उता ॥ उदुगेम
वकुंमप्रचरुमेपा सिउभा
एकंमुंयष्टिभउवगिधुंजुम
रुमेगभा भवलगाकुंवि
प्रमंनमीनंभदुमेभुउभा

कसूपासनं ॥ नामकभूतसंभवः ॥ ननुतेयमने
 मने ॥ त्वदिभयउतयः ॥ ७ ॥ नमविहीमभेर
 पुं ॥ त्वदिभयउतयः ॥ येनेभकंयसिउ
 तउदगिसुक्रयउः ॥ १० ॥ भूमिभयकुरयेसु
 उभूमिभयसुक्रयः ॥ श्रीभूमिभयसुक्रयः ॥ ५३
 श्रीभूमिभयसुक्रयः ॥ भविः ॥ भूमिभयसुक्रयः ॥ वीर्य

भादपदभादभायंरुद्रक-
 रुद्रकमिवभा नेकरुद्रकवक्रं
 रुद्रकवक्रंरुद्रकभा पदभा
 रुद्रकभापदभापदभापदभा
 भा वक्रवक्रभापदभापदभा
 यक्रवक्रभापदभापदभा
 यक्रवक्रभापदभापदभा
 रुद्रकभापदभापदभापदभा
 रुद्रकभापदभापदभापदभा

जिसी ५

भवरात्रुठिः॥ ठरातीयं गिरुन॥ सुएमु
उतलकं॥ सुमिहृमेवतायामु॥ प्रकं पा
ममं॥ सुमिहृतायगिरुनं॥ वयं पीमदुपा
भद॥ भाविहृकषिउरुनः॥ मंगुदे॥ भया
दाउ॥ (३५) अवमकुं गुः लकू मवउमम
मकि॥ सुचिमतिकं लकू॥ रापेरुहं

सिग-
मु-
उ

इधविइमभदुतेपापनाम
नभा मभुपतेमवतालय
मगकोठयपदभा मेगमि
मिकठयहपुमिदमतडिद
नामनभा डिमहुंयपठे
वभठवदुवमिहृठका
गल्लमगपभा मेलठउमद
पेपमभा ॥ ३५ डिम्रीगल
ममुइमभुकेमभा ५

॥ राधा सति भगवत् ॥ सत्मा ईशले क्रिष्ण
 लपेक्षु क्रिष्णः ॥ यमुविरा यभाप्रेति
 मयं ईशं सत्यः ॥ सकृदभिमिहेक्षु
 गीष्णु ईशेन मारु ॥ मयुदम ॥ यक्षु ॥ भु
 जविष्टं नमस्यः ॥ मरेः ५ उतिवतिष्ठुभा व
 लिष्टाष्टं सत्तु मि उभा रूष्टु पाकन

मिमीगलमायनमः ॥ षंतीस्मि
 पुठिरुल्लादतिगो मारुपुम
 धुम्भुः ॥ मयुद्विष्टु ॥ डाधिपुष्टु
 लयुगा यामपुलेकाडिष्टु क
 मीरुष्टु मीमष्टुगार धुम्भुमी
 नष्टुडा मवीमपुकमंयुडाकग
 लुं ईशमारिकाया ॥ उतः ॥ षिष्टु
 किर्गाडि विष्टुमिनि केलाम
 रमनि ममाद्विष्टुमिनि कंक

की प्रदग्दुल

विरामने उरुभारकवा सुकैः ॥ गेगरसुभय
 गयः ॥ ययभारु नव रुद्र ॥ सात्रिभवम
 उधमं ॥ सात्रु येभवम धा ॥ रात्रभारु
 लरायेज ॥ सुठिभरु मिउंठम हमेकुडा
 मिमात्रये ॥ वरुनेऊ नकिविधु ॥ रायेत्रभुए
 देभतः ॥ सुकीधुभवभायेति ॥ नात्रभरु

किग्वमे वृद्धलि रुमूलि नगर
 यलि वृद्धमारिलि मिष्टुधेविम
 मेवेरुभाडा गायडि भाविडि भा
 भाडि भवाणरे भवेसुर विमुसुर
 विमुकडु मभाणिविसूत्रिमय मि
 मित्रय मिनुभा भुडुय केव
 लृ केवलभुडुयमिव निगमूयड
 ये निरुपारिमय वृद्धविधुभद
 रनिभिडे भेदिनि डेधलि क्य

५८१०॥ सुने सुउरुभाऊन॥ लऊउम
सि सोउभाः॥ भा विडी ५५ य सुन

हिंरी
००

सुनय सु भवाय याउ ५५

उमउमदिउयां

यडी ५८ लः ॥

॥ हिंमुठे हि ॥

॥ ॥

दूरगमिनि। हिंउिभउधूमविनि
कल कलगिमिपि कलगहि सु
लुनिउ भिंदरउ येगरउ येगसु
गविभिउ ठउल्लवडल भागधिय
कगिल मुने मुल्लये दिगल मर
ल मारिकेउममेरुयाम ॥ पूसु
भ्रमद्वगमेन भाउमरेपल्लवडा
हि यवमचमभापु मारिकधूलभा
माघि भृदम ॥ सुभासवडकभास माव
३ श्रीरद्वगारिणी डारमभाचडी

विभक्त गायत्री नमः ॥ विभक्तः भक्तवत्ति
वक्षी ॥ गुरुदंभयुक्तक ॥ एवमुपमं यजु
कृतैकपरमं भिक्तः ॥ कभक्त लक्ष्मीभाला
कृत ॥ गायत्रीं नमः भुदभा ॥ गायत्रीभावह
विभक्तवत्तिः ॥ धाक्तु ॥ विनैकसंयुगी
मुक्त ॥ यक्ष चैव भाषा गुरु ॥ हतुगिकाविग

व यक्षिणीमारिकाभुमी ॥ उदि
मन्त्रिणीभट्ट इत्यममयभू मेदिता
यां भुक्तुडिमिगवडाम मारिकाभुडं
भभुक्तुभभाभुमी ॥ सुक्तभा ॥ ॥
विनभैगल्लीकगवट्ट ॥ विनं सुक्तमा
वपरिभाभुडभुडिरेक भिदभ
नभुडभुडिभुगवडं म र्वी
भभक्तुगडिनी सुक्तं भुक्तं उक्तं
भिक्तनवभुधैपभभुक्तुगल्लीभा

लिङ्ग ॥ भण्ड उ मली कउ ॥ भाविही उंन
 भण्डभा ॥ भाविही भावह ॥ मरु मरु क
 गनह ॥ व सु गम रुव दिनी ॥ भुलेक थ
 रु भंयऊ ॥ भा भ वे रु प्रिया मरु ॥ भाभा
 यं विष्णु देवह ॥ य उं नो नि मरु सुती म
 गधुजी वा ह ॥ छि मुले यं लि पि कुले

स्री

सुमीग ॥ सायामः जैषी दु ल गव ह्ये
 उरः मुविपः सवेयधः मुले नि वैकमः
 दमक र उ उ उ व उ मिव मी भु
 र ग मु री दु ल ह्यु मि ग उ र भा भुः मि
 मु उ उ यः म भा पी नै भु द सी व भा दे ह र
 कै कि कि भु उ उ थ र उ उ व उ वि थ र क र व
 जी व क द क थ प य जी भु द भा ठ ज र भ ठ
 रं वे र उ जी म उ उ रं स व र थ र जे ॥ लि उः रिया वि
 उ उ न भा पी नै भु द भा वु द ॥ म प कै ठ ठे
 थ र म उ म य उ थ रं रा कु प ठ र व उ वि ठ य र

सु

उरुप्रसूमेयसा ॥ विविहृमकि ॥
 सुमेगुमभुतिं प० ॥ रुडवहु ॥ भं। वि
 ॥ नभमिमभुं सत्तु ॥ ५६ कं मिव कृपि ॥
 ॥ मिभाये गपी० भुं ॥ भुक्तिरुभमभुमिभुये ॥ ० ।
 ॥ विमीगुं पभा नं ॥ वरुभ नरुविगुदं
 यशुभा निहभा ॥ ॥ मिभ नरु यउ प० ॥ १ ।

॥ ॥ विनभः निवाय ॥ विपाउं तिलाकउमिभुं क
 भमेरु कविभुं ॥ सुविभुं मानरिभुं ॥ ५॥ ॥ ॥
 विपी यउ ॥ ५॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 सुविभाभरु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 प० मभुद नि ॥ मभुदुं न पमिभुद नि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रिमल्लनतिमिरावृष्ट॥ हृनल्लनमिल
 कया॥ मरुममीलितं येन॥ उमैसीगुरु
 वेनमः॥ ३॥ गुरुवृक्ष गुरुविष्ट॥ गुरुभाक
 मदेसुराः॥ गुरुवेष्ट गुरुवेष्ट॥ उमैसीगुरु
 वेनमः॥ ४॥ मपुष्ट मपुष्टलाकं॥ हृपुष्टेन
 ॥ मपुष्टमपुष्ट॥ उमैसीगुरुवेष्ट॥ उमैसी

३
 मी

३

कपरिमपुष्टमि॥ उउमपुष्टनपुष्टकमि॥ मपुष्टुते
 नपुष्टकमि॥ उउमपुष्टहृपुष्टकमि॥ उउमपुष्ट
 नपुष्टपिष्टमि॥ मपुष्टुतेनपुष्टपिष्टमि॥ उउमपुष्ट
 हृपुष्टपिष्टमि॥ विपुष्टमपुष्टतिगमिपुष्टम
 वमपुष्टुतेमि॥ विपुष्टमपुष्टमि॥ विपुष्टमपुष्टमि॥
 उउमपुष्टमि॥ विपुष्टमपुष्टमि॥ विपुष्टमपुष्टमि॥

क
 वैष्ट
 ०

गुग्गेनमः॥५॥ त्रिनमस्तु नमः॥ गवः प्रिय
 यशः कृपिलः॥ विष्णु वरः गमं मिष्टैः॥ श्री
 तानेक विगदभाः॥॥ तव यत्नव कृपाय॥५
 गमः कृक कृपिलः॥ भवः सुनतमे कुरु क
 नवेमिस्तु यत्नः॥ भुवः यमया नृपः॥ वि
 गदय पादने॥ पतः यत्नः॥ कुरुः॥

यथाऽपि भद्राय भावकः यत्नः त्रिनमस्तु नमः॥ कृपाय
 भवः लकः नमः॥ सुतेनमः॥५॥ यत्नः॥॥ वि
 षेऽपि विष्णु नमः॥ सुतेनमः॥५॥ यत्नः॥॥ वि
 षेऽपि विष्णु नमः॥ सुतेनमः॥५॥ यत्नः॥॥ वि
 षेऽपि विष्णु नमः॥ सुतेनमः॥५॥ यत्नः॥॥ वि
 षेऽपि विष्णु नमः॥ सुतेनमः॥५॥ यत्नः॥॥ वि
 षेऽपि विष्णु नमः॥ सुतेनमः॥५॥ यत्नः॥॥ वि

3

श्री

कृष्णमित्र॥ हृदिनं हृदिनं य॥ प्रक
 मायप्रकमित्रं॥ विवेकिमं विवेकय वि
 भक्तय विभक्तनं॥ परमाद्भुतयेयुषे
 नमस्तुदभयदम्॥ मरुमासिउकृपेन
 विरुदिठवममनभा॥॥ मयमरुल
 पदुल॥ मकलसीउगमिप्रकं॥ वग

वाः
 वैम
 9

कृष्णमित्रं प्रलवलय ५५ लवलात्रितेः॥ म
 विरुक्तं किभाविममिमुं लिमासासुताः॥ मत्रे
 धे सुल पलवमिउयमः॥ ५५ मरुमदुल॥ मचा
 म परिप्रके विणयउ॥ सीवमकलूमः॥॥॥ रि
 मकुचिमाद॥ रिक्तमाद॥ रिक्तवः मद॥ रिशः मादः॥
 रिक्तवः माः माद॥ रिक्तमाद॥ रिक्तवः मादः रि

वामपादि पाठ्येन उक्तैर्भाविष्यत्तद

ॐ नमः ॥ यथावत्सुखं तवत्तु ॥ ॐ नमः ॥ विष्णवे

विंशतिं च लपेटकं प्रकृतं ॥ धर्मिगमि
 गुणं लपेट ॥ विगुणं नमः ॐ ति। ५ ॥ उरु
 रेगुप्रसः ॥ ॐ तिगमिमंप्रस ॥ ॐ धर्मं
 उं लपेट ॥ विंशतिं च लपेटकं प्रकृतं ॥ धर्मिगमि
 गुणं लपेट ॥ विगुणं नमः ॐ ति। ५ ॥ उरु
 रेगुप्रसः ॥ ॐ तिगमिमंप्रस ॥ ॐ धर्मं
 उं लपेट ॥ विंशतिं च लपेटकं प्रकृतं ॥ धर्मिगमि
 गुणं लपेट ॥ विगुणं नमः ॐ ति। ५ ॥ उरु
 रेगुप्रसः ॥ ॐ तिगमिमंप्रस ॥ ॐ धर्मं
 उं लपेट ॥ विंशतिं च लपेटकं प्रकृतं ॥ धर्मिगमि

मृ५

५० तिदिशदः ॥ विमुक्तयुक्तं देविमुक्तः म
 चमदथातिमुक्तः ॥ ॐ दिगमिपियतय भक्ति
 लुगलठे चयभादः ॥ उतः सुमनसेनमदुष्ट
 ॐ तिदि ॥ मुष्टमदगपयतमदुष्ट ॥ मदगाय
 शीमदुष्ट ॥ उरुमंदेमे उरुमंभउय ॥ उरुमं
 भाज्ञानं उरुमंठेसायलपदिमे विनियोगः ॥

कः
 वैमं
 ५

कयकाभुलं ॥ विमल गनुयध ॥ १ ॥
 शुभा ॥ प्रमत्रवरनेकं ॥ सकलदेवता
 कृपि ॥ अत्रिष्टि रसिदं मगं उरु निरु
 न प्रचंगुभा ॥ सिवा कीउदुं सिव
 नं प्रमत्रं ॥ प्रमत्रै पविष्टं प्रमत्रं विष्टं
 मिवं प्रमत्रं प्रक मप्रकृपभा मिवरः

भाः भादः ॥ सिमद भाद ॥ वि एनः भादः सिउयः
 भाद ॥ सिमद भाद ॥ वि कुकुवः भाः ॥ उरु विउः ॥
 ॥ विमि गं भाद धं रु प्रे नमः ॥ उपरु से नमः ए
 रै नमः ॥ उपरु उ नमः ॥ उरु प्रे नमः ॥ उरु उ नमः
 उपरु उ नमः ॥ उरु नमः ॥ उरु उ नमः ॥ उरु य नमः
 ए वि प्र मत्र य नमः ॥ उरु य नमः ॥ उरु प्रे नमः ॥

॥ परमः भट्टगुरुं प्रणमामि ॥ डिगुग्वनमः
 परमगुग्वनमः ॥ परमाधिगुग्वनमः ॥ परमा
 सादा नमः ॥ मुनिमिह्वेनमः ॥ ॥ ॥ डि
 मष्टमीमुभनसेणमवुमु ॥ मेरुधुधुपिः
 धुउलेमुनः ॥ मुनिमेवज ॥ मुभनसेणनेविनि
 योगः ॥ स्ववृ विह्वनमा ॥ मुमुभनयनमः

र

वाः
 वसः
 ३

कुपेनमः ॥ मुद्रयनमः ॥ मानसेनमः ॥ वासेनमे वा
 ॥ मस्यजयेनमः ॥ वृद्धनमः ॥ सुतायनमः ॥ उपसेन
 मः ॥ ॥ विकुते ठवृकुविष्ट सुधद ॥ नमः ॥ पत्नी
 नयश्चवधद ॥ नमो गयत्री विष्टवृ गतीवधद
 नमः ॥ विष्टा उरिमेष्टवधद ॥ नमो वृष्टि
 विवधद ॥ नमः ॥ पिता पत्नी योवधद ॥ नमः

ही सुठरमकै नमः ॥ श्री ५ विष्ट नमः ॥ अलपूक
 है नमः ॥ मेधाय नमः ॥ सुनतुय नमः ॥ पद्मय
 नमः ॥ कलिकयै नमः ॥ शि ५ विष्टया एत
 लेक ॥ मविदं विष्टु न एत ॥ दंमठयभं
 मवि ॥ पविदं कुमममना ॥ गंग ५ उमे
 नमः ॥ मंमगधु है नमः ॥ मुकुतय नमः ॥ कैकैतु

[illegible]

श्री ५

पलायनमः ॥ ॐ ति शुभमनये नै च उवा
यह मान पद उं कुवि मि क प्र रा ये ॥ भले
नरु वी पू ॥ ॥ ति ही ग क ग क भं दं ठ ल
ॐ ॐ ति ह मि द सुं नि ण य ॥ सु म ग के वि
रु य ॥ ति सु प म यं उ उ कु व ॥ ये कु उ कु वि
मं मि उः ॥ ये कु उ वि थ क उ ग उ न सु उ मि

निकम

वः

वैसः

२

गवेष ॥ प ग वि दे धा म क य ये व भू य ल भा न भू वी
ॐ य यं निकमनः प ल वि व द उ ठ ल व जी ल
ध ण यः प म उं य गः क मे न क ल उ मा ॥ ॥ ॥
ॐ कु मि ॥ ति म द ग य डी मा वे डी म ग भू डी म द
वृ द डी डी य उं डी य उं म उ ॥ ॥ ॥ ति म प्र दे
ये ॥ ति प न ध भू उं ॥ ति उ मि पृ प ग मे प म ॥ ॥ ॥

वडिनीजं पगमि वनमदमं येष्ट ॥ उयेः भाग
 मुं विरुव ॥ उरु कृवा भुत णय कृल प्रकृनर
 ॥ भउरु ॥ पनमु नैवभा जे न क किट्टमि
 क्रिः पू न यतुं पकू रं किट्ट ॥ ममु नं पू पयि
 उरुवा भकृ के पा प मरु पं ॥ ममु भु मा इ कं
 प्र पू व लं ॥ १ कृ म म र म उं लं ॥ यं मं लं दं

उयं नं भा ला नं मु ह नं ॥ ॥ ॥ वि उं मू य व ल
 द मु य भ द ॥ मृ ग य म क्रि द मु य भ द ॥ य भा य र
 कृ द मु य ॥ नै र उ ण रू द मु य ॥ व म य प म
 द मु य ॥ वा य वे म रू द मु य ॥ कृ वी र य म रू द
 आ य ॥ उं म न य रि मु ल द मु य ॥ द रू न प रू
 द मु य ॥ वि रू वे म रू द मु य भ दः ॥ मृ न कृ

॥ जेति ५॥ यम येन मो ध ॥ मदन धु व
 न मिकुद ग ॥ सियं जेति वायवी ल न धे रु
 म व ॥ ए पु मे ध ये ग ॥ गं मि ति व क्रि ती ल न म
 उ ध मि व ॥ ए पु न रु द ये ग ॥ वं मि ति व म ॥
 वी ल न म ॥ म म ॥ ए पु न धु व ये ग ॥ लं जेति
 ॥ ५ ॥ धी वी ल न धे रु म व ॥ ए पु न ॥ म गीं रु

प्रि

मि हः ॥ म धे ॥ कु ल न ग य म रु व ग हः ॥ वि मृ गृ
 मि ह ह भा दः ॥ व रु ॥ म रु मे हः ॥ कु भा र के भा
 ह वि रु व रु हः ॥ जे रु वा द म उ हः ॥ म म रु
 जी सु रु हः ॥ ५ ॥ ए प ति म व रु ग हं ॥ ग ॥ प
 डि ग रु हं ॥ म रु के उ हं भा दः ॥ व रु ग वा हं ॥ म
 न रु म ग रु हं भा दः ॥ ५ ॥ रु ॥ क म य ॥ ए व

वाः
 वे मे

मीसक ॥ देउति मिवरीलेन ॥ समल्लयुन
 मिव ॥ इकं एका ॥ कुरु लीनी एका मुंणीव
 यस्तु कुरु निभु कुरु ॥ ययिदं अलं भगना
 ॥ पू ॥ यति धं कुरुदग ॥ उति कुरु सुमि ॥ न
 वी एका ॥ अलं भगना पू ॥ यति धं भगना
 भनये एमय मः कुरु एका धं भगना

य मीसक ॥ ५१ य ॥ लकु ॥ कभला यमिष्ट मिष्टः
 यस्तु मव गिम कुरु यति मेव गतः ॥ यस्तु मिष्ट
 भवेष्ट ॥ गेरा मिष्ट ॥ भवेष्ट ॥ ललिता मिष्ट ॥ भ
 वेष्ट ॥ कुरु कुरु गम ॥ मीसक गतः ॥ कुरु
 गतः ॥ यिष्ट गतः ॥ भगीव लमेव गतः
 कुरु गतः ॥ यम गतः ॥ यिष्ट ॥ कुरु गतः ॥

स्त्री

3

पू० मज्झिमुल्लवता यो मीरीलं इया मज्झि
विनियोगे भुमंभुते ॥ उधीनामिगभिवरुत
सुसंभिरुमिरेवतं ॥ गुह्यरीलं थरेः मज्झि
वमंभुदुदुमंभुके ॥ सिमुंहीरे यं लं वं संधं
संदंभः ॥ भिदंभमपरममिववृवाङ्गनसुकाः
मेरुसिद्धा पू० पू० उदैवागहभुपंमिं

वः
वेमं
१

कुवः ॥ मः ॥ सिमुकुवः मः रेवताहः ॥ सप
कुवः ॥ मः ॥ सिमुकुवः मः रेवताहः ॥ प्रहः उपप्रहः
मदगेवरी ॥ भाविरी ॥ भासहै ॥ देव का
मिहैवपकमिहः ॥ सिउहिप्रपामेपरे
॥ सिनेमं गेवमवदले यमु गे ॥ विमरेव
नविरेम उिमु ॥ उतभुयते ॥ उतभचते मदस

त्रिभुवु सुद॥ ॐ त्रिभुवु ॥ ५ त्रिभुवु यद्वरणीविवि
 वृष्ट ॥ ॥ अमभक्त कृष्णः ॥ ॥ त्रिभुवु कभक्त
 वृष्ट धिः ॥ गायत्री मन्त्रः ॥ अमभुती मन्त्रः ॥
 दलेनी रनि ॥ अमभक्त यः ॥ अमभुती कीलकं ॥
 मरीगमुष्टे विनियोगः ॥ त्रिभुवु नमः ललाटे
 ॥ त्रिभुवु नमः मन्त्राय ॥ त्रिभुवु नमः ॥ मन्त्राय

अमभुती मन्त्राय ॥ ॥ ॥ ॥ त्रि
 अमभुती मन्त्राय ॥ अमभुती मन्त्राय ॥ अमभुती मन्त्राय
 पत्रिका ॥ ॥ श्री विष्णु मन्त्राय ॥ अमभुती मन्त्राय
 पत्रिका ॥ अमभुती मन्त्राय ॥ अमभुती मन्त्राय
 ॥ कल मन्त्राय ॥ अमभुती मन्त्राय ॥ अमभुती मन्त्राय
 ॥ अमभुती मन्त्राय ॥ अमभुती मन्त्राय ॥ अमभुती मन्त्राय

७
स्मि

सिंनमः वामनः ॥ सिंनमः रुक्मिकल् ॥
 सिंनमः वामकल् ॥ सिंनमः रुक्मिनाभा
 ॥ पुट ॥ सिंनमः वामनाभापुट ॥ सिंनमः रु
 कि कपिल ॥ सिंनमः वामकपिल ॥ सिंनमः
 रुचै ॥ सिंनमः सुपुत्रै ॥ सिंनमः रु
 चरुपुत्रै ॥ सिंनमः सुपुत्रुपुत्रै ॥ सि

वः
वेसं
३

नायनाय ॥ रुक्मः ॥ रुक्मः ॥ वरु ॥ य
 रुक्मः ॥ रुक्मिष्टा ॥ रुक्मिष्टा ॥ रुक्मिष्टा ॥ य
 वरुष्टः ॥ श्रीमदनायडी ॥ भावुड ॥ भावुडी
 सिनैरुगवडै वामुवय ॥ पञ्च यडै वरुष्टः
 रुक्मलैकपालैः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ रुक्मिष्टा ॥ रुक्मिष्टा ॥ रुक्मिष्टा ॥ रुक्मिष्टा ॥

[illegible]

ॐ

भुले ॥ सिं नमः ॥ वाम गुल्ले ॥ सिं नमः ॥
 किं नमः ॥ सिं नमः ॥ सिं नमः ॥ सिं नमः ॥
 सिं नमः ॥ सिं नमः ॥ सिं नमः ॥ सिं नमः ॥
 गुली भुले ॥ सिं नमः ॥ सिं नमः ॥ सिं नमः ॥
 उं नमः ॥ वाम गुल्ले ॥ सिं नमः ॥ वाम गुल्ले ॥
 नमः ॥ सिं नमः ॥ वाम गुल्ले ॥ सिं नमः ॥

वाः
 वैम
 ७

५६८
 ५६८

इयभाद ॥ वरु यभाद ॥ उं यभाद ॥ उं यभाद ॥
 ॥ मिष्टभाद ॥ विष्टभाद ॥ विष्टभाद ॥ विष्टभाद ॥
 भाद ॥ मरुभाद ॥ मरुभाद ॥ मरुभाद ॥ मरुभाद ॥
 यभाद ॥ वरुभाद ॥ वरुभाद ॥ वरुभाद ॥ वरुभाद ॥
 यभाद ॥ ॥ वरुभाद ॥ वरुभाद ॥ ॥ सिं नमः ॥
 उं नमः ॥ उं नमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ सिं नमः ॥

भकुलिग्रले ॥ सिनेनमः वामगुल्लुग ॥ सि
 पंनमः ॥ रुकि ॥ पात्रे ॥ सिठंनमः ॥ वामपा
 त्रे ॥ सिठंनमः ॥ यथे ॥ सिठंनमः ॥ नको ॥ सि
 मेनमः ॥ ए००१ ॥ सिठंनमः ॥ लरुये ॥ सिठंनमः
 रुकि ॥ कुरु ॥ सिलेनमः ॥ वामकुरु ॥ सिठं
 नमः ॥ कजुमि ॥ सिठंनमः ॥ लरुमि ॥ रुकिप

रुकुनाधीद ॥ सिठंनमः ॥ उथउरुय
 नमः ॥ सुभुनाभा सिनमसे ॥ रुकुनाभा सिनमसे
 ॥ सिठंनम सिनमसे ॥ सुयलीक नाभा सिन
 मसे ॥ सुयलीक नाभा सिनमसे ॥ मेययतीनाभा
 सिनमसे ॥ वधयतीनाभा सिनमसे ॥ नरिनेनम
 से ॥ भठनमसे ॥ भठनमसे ॥ रुकुनाभा सिनमसे

सिद्धि

[illegible]

वः
वे सं
०-

श्री वैशिष्ट्यकृतम् ॥ वनस्पतिहृत्तमः ॥ एम्
 यनमः ॥ मृण्मयनमः ॥ मृत्तुवनमः ॥ वरु ॥ यन
 मः विष्णुवनमः ॥ मरुहृत्तमः ॥ वैष्णव ॥ यग
 हृत्तमः ॥ कुत्तुहृत्तमः ॥ ऐश्वर्यनमः ॥ ऐश्वर्य
 यनमः ॥ यमयनमः ॥ यमपुरुषहृत्तमः ॥ मी
 मायनमः ॥ मीमांसयनमः ॥ वरु ॥ यनमः

रिमनः॥ रिउयः॥ रिमहं॥ रिउकुविउ
 वरिहं॥ कनेरु वधु रु मदि॥ रिउयेनः५
 मेरुयउ॥ रिमुयेहं जीरमेरुउ॥ ररु
 कुकुवः श्रुति॥ सुयाउवरु रुवी॥ हक
 गे ररु वरुिनी॥ गायत्री सुरु माभाउ
 ररु येन नमे भुउ॥ सुमिहं॥ यधु

वरु ५ क येहं नमः॥ ररु नमः॥ ररु ५ क ये
 हं॥ नमः॥ कुपेभाक मायनमः॥ अरुिहं नमः॥
 मरुहं नमः॥ कुउहं नमः॥ नरुिहं नमः॥ कुउहं
 नमः॥ धरुिहं नमः॥ नरुिहं नमः॥ धरुिहं नमः॥
 नरुिहं नमः॥ नरुिहं नमः॥ नरुिहं नमः॥
 नरुिहं नमः॥ नरुिहं नमः॥ नरुिहं नमः॥

कः। पारु। मे सेवमति उरु परि पुरु मे म
 नलेके। नके। भए। भक हिए न उरु मिगडा
 कए। गभी उ पसु ॥ महे भूषी सुगष्टि
 गुल विगदिता ॥ निधुलाभा सुकृयाभा रूवी
 विमृकृया विउर उ विठवं ॥ वेरु अला पगष्टा
 सुमे मिमृरु मे ॥ सुनके ॥ जीकी मेयं

जिरी

२९

वि ममभुभा उ पिठहे ॥ सुम सके वउठः ॥
 पिठहे ॥ कुयु सेरु कपुर ॥ सुठिले रुकन
 वने नं भुण ॥ उमउभु ॥ उिले भुं छियं उ
 घाळीगं प्रयमीये वलिभुषा ॥ मपमयभ
 मायकृभुषां पिठु मे भुभा ॥ ॥ विमवउठः
 यड ॥ ३ ॥ ॥ विमृकृउवडा ॥ ॥ पिडा पउउभुने

वाः
 वैमं
 ००

वभेपवित्र॥ परभाङ्गने॥ सुधुक्मे॥ वनधुति
 नभेपम॥ यत्रुति॥ सुङ्गने नगव७य॥ सु
 कुडावडा॥ भदगलपडये॥ भदगायहै
 मगधहै॥ मविहै॥ सुङ्गमालकगवहै॥ म
 मालकने गङ्गेनमः॥ सुङ्गेनमः॥ पधंनमः
 मीपेनमः॥ १॥ वभेनमः॥ सुङ्गलनहृजन

येमडात्र॥ पिउमद॥ ५पिउमद॥ भाडापउकु
 यासुडात्र॥ पिउमदि॥ ५पिउमदि॥ ॥ मउमद
 ॥ भाकुपकुसु ॥ ॥ ॥ ममपु भाउपिउहै सुम
 ममेवउहै॥ पिउहै॥ सुत्रेभण॥ सुत्रलेपनि
 वाद॥ ममपुभाडा ममालकनेगङ्गेः भण सु
 धैः भण॥ पधंभण॥ प्रपः भण॥ ॥ मीपेः भण

विणिः॥भवाय॥अन्नंनमः॥७॥अयेमानेनमः
 रुकि॥ये॥पुत्रदेवता॥विगायत्रीरु
 यधेरु॥मुक्तोमुक्तोपवीडिनीभा॥उद
 यो॥उरुकाशु॥वभाशुल्लुलेभिउभा
 पेमुपाकरकंरुद्र॥गायत्राभुमिरभुना
 भद्रमवतुयेसिपू॥संभाररुमुभट्ट

उत्थी५

०३

रुकैष्टरुलप्रलरलिनेवेमुंअन्नंभण॥उ
 लभप॥विभयाभेभण॥उंहुमि॥महेन॥
 वभतुयनमः॥उंहुमि॥सिमुग्रयभियुद
 उभाद॥पू॥ये॥॥उउवाभट्टनविभप
 मि॥भट्टवुउनविभपमि॥उउमहृहुवि
 भपमि॥यहृभमउउमि॥यहृभम

वः

वेमं
०९

सुपेष्टो जीमेषु उ वृक्षकुवधुर्मा ॥ रुमठिल्लधु
 सुधुभमा जे मधुहृदि लुधु ॥ रिगयडीमिनुय
 कृपुहृदि मधुपत्रिउमा ॥ पस पस विनिमऊ
 मयति परमा गतिमा ॥ पोरगमि भावरेमा ॥ सु
 धुठिल्लधु ॥ पूल वसुहृदि रिगोभीति गयडी
 मधुहृदि ॥ केव नभा हमा ॥ रिगोभिगठिकुरि

उहृनयभि ॥ रिगमेरुदिपनेरुदि ॥ प्रथोड
 सुमेरुदि ॥ सुयगगुमेरुदि ॥ रुदिमेरुवृवादन
 ॥ ठक्तिरुदिचयेरुदि ॥ भापेरुदिभउरुडमा
 मेरुदिमेरुमेरुमेरुमे ॥ भजेवलपिउं मम ॥ गमु
 गमुभगमेरु ॥ वृक्षवधुभद सुग ॥ यडुमेरुल
 यमवे ॥ उरुगमुहृदिमने ॥ रिगुलिभिउलिमे

६३॥ तिग्मं मेधुं वृत्तम् ॥ तिम्र न के ॥ पद्म मि
 । मयि वि ॥ मयि मयि ॥ वृत्त मि ॥ विष्णु हर्म्यं
 विवकः ॥ कवमं ॥ तिम्रः कः ॥ मयि य ॥ ति
 मयि य ॥ तिम्रः कः ॥ मयि य ॥ ति
 मयि य ॥ तिम्रः कः ॥ मयि य ॥ ति
 मयि य ॥ तिम्रः कः ॥ मयि य ॥ ति

श्री

२

उल्लेखयि मयि ॥ उल्लेखयि मयि ॥ उल्लेखयि मयि ॥
 मयि य ॥ तिम्रः कः ॥ मयि य ॥ ति
 मयि य ॥ तिम्रः कः ॥ मयि य ॥ ति
 मयि य ॥ तिम्रः कः ॥ मयि य ॥ ति
 मयि य ॥ तिम्रः कः ॥ मयि य ॥ ति

वः
 वैम
 ०३

ॐ

॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

वि
सी
०

विमदः नठे॥एतः हृमि॥विउयः कठे॥
 विमहं मिगमि॥विउयुमयेः॥मविउःएवे
 ॥वरेष्टं कष्टं॥ठमेनठे॥मवमु हृमये॥
 णीमदिकठे॥णियेन भिकयं॥यः मज
 येः॥नः ललाटे॥वृद्धवः भुगेभा मिर॥
 ॥मिद्धः ५ विष्टा मने॥हृमय यनमः॥

वः
वैमं
०२

उष्टं पिष्टं पूरु भूमि॥भृगुमेजवदिमके
 ॥मृष्टः मृनकेष्टेनमः॥मृथमृष्टनः॥॥
 वि गेवणीनमृष्टा नं॥पुत्रमृगनिकमनाभा
 मृष्टिनां यामभाननभृकयुयु पतिपुत्रभा ॥ ॥
 ॥मृष्टन॥विमुनां मपतिष्टं नं म मृथमं पाय
 उगिभं॥वायुभा नं मृभीं म मृनके मिति

त्रिकुवः सुनरुङ्गने विष्णुवे मिमम माद ॥
 त्रिभुः अदङ्गने रुद्रय मिपा येव धल ॥ त्रि
 भद्रः ॥ गं सुगङ्गने कवम य रुं ॥ त्रिभुनः म
 रु मिवाङ्गने नेरु हं वै धल ॥ त्रिभुपः महुं प
 रम मिवाङ्गने सुभु य दल ॥ ॥ त्रिभुः उं हं भु
 विमि मिद्रु पिः ॥ गयरी सु रुः ॥ मयि र्वता :

पेरुवि रुव भवपुः पमये वय मिमि रुः
 मय के रग रुद्र भद्रः ॥ ५३ः पिमाम भुगवः
 मभभु ॥ येम रुमि सु त्रिभया प्ररु रुम ॥ ॥ पि
 पी लक की ए पउरु क रु ॥ वरु किताः क म मि
 वरुः वरुः ॥ ५४ः उउ रुमि रु मयने उरु वि
 मभु भुपिने ठवतु ॥ ये धा नभा उ न पिता न

सि
३

सुउवलः॥ धरुभुः कुः पमयेः॥ पू० यम
विनियोगः॥ सिद्धवः॥ लभरु विरधिः
उधिरुः॥ वायुदेवता॥ सुभवन्तः॥ उधरु
भुः॥ कुवः सवेः पू० यमवि ३॥ सिद्धः॥
धरुभुः॥ विरधिः॥ सुवधुधुः॥ सुदेवता
पिङ्गलवलः॥ गङ्गाभुः॥ धः गुह्य॥ पू०

वः
वैमं
७५

वत्त॥ वायवमिद्धिउषाट्टरुभु॥ उरुप्रयत्नं
कुविमभुमेउत्तं यातु रुधुंभु॥ रुतकेवतु कुत
निमचनितषात्रं मेउरु चेमविधुउत्तं उरु
भु॥ उभा॥ रुदकुत निकयकुतभु॥ पू० यम
कवयैउधभा॥ सुतुममेकुतगलियमभउ
किउयेपलकुतभु॥ रुधुभु॥ वि॥ भयो

यमविनियोगः॥३॥ तिमदः उट्टु गोटमदधिः
 वदजीसुतः॥ वदमतिरेवता॥ दधवतः म
 एमभराः॥ गदः नडे॥ भूययमेनि॥ ४॥ तिलनः
 उट्टु॥ मद्रिदधिः पद्रिदधः मिद्रवतः
 रेवता॥ नीलवतः॥ पद्रमभराः॥ लनः हन
 ये भूययमेनि॥ ५॥ तितपः उट्टु वमि

विमसे उपासिरे उयमि गठवतु॥ उट्टुसु
 दनरेमसु सुत्रेसु मभविताः॥ कुविदुतपक
 गय गदीमवाययेयः॥ मपमहेतः॥
 यमाय उमगय॥ मद्रुवे मद्रुवयम॥ वै
 ॥ वमतायक लाय मेवभूय दायम॥ मद्रुग
 यनीतय॥ मद्रुग मपमभिविनि॥ मद्रुकेरु
 पु

वि
म
७

धृतिः॥ इक्षुधुः॥ उक्ते वरु॥ लेदिउवतः
 केवउधुः॥ उपः कहे॥ इत्यमवि॥ उद
 मयेः॥ सिमममद हृति गयरी मयुजह
 मः॥ सिद्धः उमविउचगे॥ पामुधुधुंनमः
 सिद्धवः॥ ननेवधुपीमदि॥ हृमययनमः
 सिद्धः पियेयेनः॥ पूमेरुयाज॥ मिरमेधुद

वः
 वेमं
 ७

गयरीभय सिद्धगुधुयवैनमः॥ पामदधुकी
 उत्राय प्रुतापि पउयेनमः॥ मवृन॥ सि
 यिधुविवमउिकेइ केइथालः मकिधुगः
 ॥ उमे निवेरुयाष्टिह वलिथानीयमं युउभा
 केइपि पउयेनमः॥ गधुपिपउयेनमः॥ ॥
 अथमवृन॥ सुयुधुधुंनंविहं॥ मजमे

पं० ह० मः॥ मि० म० वृ० ॥ पू० प० डि० पि० ॥ रू० मि०
 वा० य० मु० दे० व० त० रि० प० म० ग० य० डी० सु० रू० ॥ य० डा० वा०
 पू० ७० य० मे० वि० ति० ये० मः ॥ सु० पे० डू० जी० ॥ म० व० डै० टा०
 मः ॥ सु० प० मु० न० ये० रि० टा० मि० ॥ उ० डू० वि० उ० रि० टा० वि०
 सु० मि० डू० पि० ॥ ग० य० डी० सु० रू० ॥ म० वे० त० दे० व० त०
 य० डै० डि० वी० रं० ॥ ग० डै० डि० म० जि० ॥ न० डै० डि० की० ल० क० भा०

क० भा० पि० मि० ॥ पू० य० सु० उ० षा० ग० हं० ७० ७०
 पू० तः० पि० त० म० दः ॥ म० य० पि० डू० म० य० म० उ० मु० व०
 द० मु० रू० न० म० न० ॥ ग० य० यं० पि० डू० क० ये० ॥ म०
 य० मु० व० य० ग० ह० त० भा० ॥ सु० म० न० सु० क० ल० षा० य०
 क० भा० य० वि० ल० या० य० म० ॥ म० डू० ७० व० मि० न० म०
 य० पि० डू० सु० १० य० म० ॥ प० म० डू० म० ग० य०

वि
मी
+

सुकरादुहति॥ सः कोउवडैरुमकलाः॥ क
मउउपा॥ मउचिंमउउवा॥ पप्रविंमउमि
वः॥ परभाङ्गरेवउ॥ यालवमभमउउ पउध
कभा॥ पुवः पुमधः॥ मउचजहपुविनियेगः
॥ सिउडुविउअदङ्गने लरुयाय॥ सिवाहे
मेभङ्गनेमिगमे॥ सिउजेरेवधुनिगङ्गनङ्गने

व
वेमे
०१

करं रेसमेकंगयामिला॥ यउउउअगेवि
उं पिउउंउउंनकुयुभा॥ मभन॥ सिउः
यमधेविमज्जयामिनमः॥ उंउिमि॥ सि
उउअ मउउउव॥ मदगलपउय॥ वभुम
वउ॥ सुउनेव॥ कलमथुराने भक्तिमभु॥
मवभु॥ ववेरुकेनमः॥ उरुकउयलनमः

मिपयै ॥ छिपीभादे निगठभाङ्कनेकवम् ॥ छियेये
 नः ॥ उममने ॥ नेरुहं ॥ छिपुमेरुयारु भेणङ्कने सु
 भूयछण ॥ छिमंउं भुवि ॥ छिमुंउं वले ॥ छिउंवि
 रुकि ॥ गङ्गे ॥ छिउंउं वभगङ्गे ॥ छिउं चं रुकि ॥
 नेरु ॥ छिउंउं वभनेरु ॥ छिउं लि रुकि ॥ कले ॥ छि
 तेमंयं वभकले ॥ छिउं रुकि ॥ नभापुटे ॥ छि

॥ छि सुल्लेभमीयउं नषा नैवेरुष्टुष्टु रुकले
 मगीयाशु भिष्टुं रुगवङ्कनुमदभि ॥ छि
 सुपत्रेभि ॥ ॥ ॥ छिउंसा न विष्टु कभला भ
 नकाउिकेय विष्टुयाक ॥ नीसगले सुग
 भा ॥ छि सुभगङ्कलमे सुवकसु पाउं पाउं
 नभाभि मउउं पिष्टु भुक्ति देउं ॥ कलिकलध

सिं जे व म न भा प ट ॥ सिं मे रं व रू ॥ सिं मुं वं मि र
 के ॥ सिं कं मुं क रू ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र
 व म रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र
 ने ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र
 रू ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र
 मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र ॥ सिं मे रं मि र

विभक्तैः प्रलितः भिक्षु भिक्षु ॥ १ ॥ मम मम भाला
वीक्ष्य भाने भिक्षुः पितृ मम भिक्षु च्युत
भिक्षु च्युत भिक्षु न भिक्षु विभक्तैः भिक्षु यक्षि
भिक्षुः ॥ ॥ अयः मम ॥ ॥ यक्षुते यक्षु रिष्टा भि
उक्षुते न भिक्षु ॥ ॥ यक्षुते उक्षुते लक्षुते ॥ ॥ उक्षुते
यक्षुते ॥ ॥ मम यक्षुते ॥ ॥ मम यक्षुते ॥ ॥ मम

भंभकभुतवृष्टाङ्गयरीनगय० इकंभट्ट
 उ॥ उरुइकट्टाभनेवरुचयतिभि॥ उरुमे॥
 ॥ सुषपारुकुधुइइतिमापाउंउवट्टाभः॥
 सिमेउं केमवायनभः॥ पारुकुधुये सिमेइं
 नगय० यनभः गुलुयेः॥ सिउंविंभाणयनभः
 ॥ सुयेः॥ सिउंउं नेविळयनभः॥ सवे॥ सिउंवे

ननेनसगभि ॥॥॥ सिनमेइकल्लनमेथपिहै
 ॥॥॥ सिउरुकलममुपनिणय मुमुयनेवम
 यतिउतिधुइइइउं॥ उवायउमुमदेउपधु
 यतुभकउः मुणनवः उंरुपुमुठवाभमम
 दुभायाउ॥ वाधरुमुविप्राउउव अनिविणउउ
 उभः॥ भदभुकेगेउकि मुल्लारुभममुवे
 ॥५

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ भद्रः ॥

विष्णु वंदनार्थं

॥ सुं जि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

विशाल विद्यापीठ
बी. ए. ३५३

सुकाय

सिमंतीवधुर्वयनमः सिवके ॥ सिमंशु
 भयनमः जलनि ॥ सिमंतिं मनिमयनमः न
 भागे ॥ सिपंतिं प्रमथेयनमः ॥ नेत्रं सिपं
 येनगमिंदयनमः ॥ ह्रमथे ॥ सिपंतिं मनेकरयनमः
 ललाटे ॥ सिलेनं मृदुयनमः ॥ रुकिं ॥ सि
 मेमं मृदुयनमः ॥ पमिभाथे ॥ सिमंते दयनमः

सिमंतिं मनेकरयनमः
 यनमः ॥

३

सिमंतिं मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 गदेउ मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 उकिं मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 पिलगुं मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 मपुमपीयं मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 कां मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 कं मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 दिगवतं मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 वं मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 वं मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 उगवली मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 मी मनेकरयनमः ॥ सिमंतिं मनेकरयनमः
 पमयनलम उवीमिदः मीउव



हिमी
१

उडुगु॥ सिदेयागुमीदधुयनमः ऊवे॥ सु
 पधुनयेः॥ यान यडेउवीक्षं॥ गडेउ नजिः
 नडेउकीलके॥ सियउ द्वियांमकेदियः॥ सि
 यउरुय॥ णियंमि॥ सिमके मिया॥ सिदि
 कवम॥ सियः नेर॥ सिहुकुवधुधुय॥
 ॥ सिमषमधुधिमडेनपारुकुधुधुइमियाउं

मी
०

भगल्लः गिरभकदकुंन - ५ क
 भं विलीपि रुभापतिपुगाएकीड
 रुधुगुदउरगडेमसिवेधुधु मां
 भदिमेदय परंगिरभक दकुंन
 रुवभडेपवनडे ननिमपुंउरुधु
 भएगभनयडिभुडेपि रुकेरुवेक
 यथिडे गिरभकदकुंन १ रुक
 निमडुधुमिपकेपरासीवीर
 रुधुदउरुवत पिणउ गड
 रुदिभुमार लंगिरभकदकुंन
 रुधुयषमिभुमिवनरवेनगडे
 रुभल्लधुभनभारभल्ल डिमी
 नं भयेरुसीधुउकमीगिर ७

गवमुधिरैवउसुत्रे॥ निरुजैनायरीट्टमेलिएउ
 निमंउंउ॥ विमृभिरुपिः॥ वरुविष्टमिवा
 निमृयिरेवउः॥ गयउंसुत्रः॥ उरुउमृः
 मपेकपीउवलः॥ सुकरीवीरं॥ मदगीमुक्तिः
 ४॥ विवीउइं॥ ममाभमूपाउकपदंएयउ
 निमंउंनमः॥ पारुमुधुयेः॥ निमंउंउ॥

मीनगममुयपवीनवदुगद
 एवउउपवनभउगंनिरुमुल
 सुमुवमनिवीगिगभकलुक्कैनागय
 पिलगुगेकगवममु ०-नगयमु

हिमी
उ

मप्रसूतपथिः वयस्तेवमः गतिकसूतः मृति
उभरः ॥ मृत्भीषधवलः ॥ मुकौवीलं ॥ निष्टम
जिः ॥ सुपुष्टं ॥ मभ्युत्तमम् ॥ उपपत्तक, पदंष्ट
यम् ॥ त्रिभुवनमः गुलुये ॥ ३ ॥ त्रिंविं उष्टु
गज्जठपिः ॥ मुदेस्वतः ॥ मष्टमसूतः ॥ मृत्त
उभरः ॥ कपिलवलः ॥ उकौवीलं ॥ विमृष्टम्

यमक्तिः॥ उल्लभुं॥ विउउभसु॥ भनपाउकपदे
 छयेग॥ सिउविमः॥ लुवेः॥ ३॥ सिउंउंउंउं
 उपमहृपिः॥ विहृमैवग॥ प्रउिहृमृः
 उरुउभः॥ उंनूनीलवल्ः॥ गंकरीवीशं॥ वि
 लामिनीमक्तिः॥ वयुमुदं॥ विहृलः॥ भसु॥ गू
 देपउपैकवकभूगूदरेधपापपदेछयेग॥

सिद्धी
७

सिद्धिं कुं नमः एवे । म । सिद्धिं कुं नमः वसुधैव कुटुम्बकम्
यमेव वसुधैव कुटुम्बकम् । सिद्धिं कुं नमः । मी
वसुधैव कुटुम्बकम् । उक्तं श्रीमद्भगवत्गीतायां । सु
कमलमुद्रायां । सिद्धिं कुं नमः । म । सिद्धिं कुं नमः
म । सिद्धिं कुं नमः । म । सिद्धिं कुं नमः । म । सिद्धिं कुं नमः
म । सिद्धिं कुं नमः । म । सिद्धिं कुं नमः । म । सिद्धिं कुं नमः

मन्त्रमुद्राः ॥ मन्त्रिकदेवतः ॥ ऊर्कगोत्रीं
 लीलामक्तिः ॥ गन्धमुद्रं ॥ शिवायभक्त ॥ मगष्ट
 गमनापदं एवेम ॥ सिद्धिरेवमः ॥ उद्देशः ॥ सिद्धि
 सिद्धि ॥ मन्त्रिणः ॥ चन्द्रमन्त्रिकदेवतः ॥ मन्त्रि
 क्तुः ॥ मन्त्रमुद्राः ॥ विद्वन्मन्त्रिकदेवतः ॥ मन्त्रि
 लं ॥ मन्त्रामक्तिः ॥ मन्त्रमुद्रं ॥ सिद्धिमुद्रामभक्तः

सिद्धिमुद्रा विद्वन्मन्त्रिकदेवतः ॥ सिद्धिमुद्रा
 सिद्धिमुद्रा विद्वन्मन्त्रिकदेवतः ॥ सिद्धिमुद्रा
 भावेष्टमुद्रामभक्तये ० नष्टमुद्रापालयेगलेमा
 मुद्रावेवम ॥ नष्टमुद्रा विद्वन्मन्त्रिकदेवतः ॥ सिद्धिमुद्रा
 मुद्रावेवम ॥ नष्टमुद्रा विद्वन्मन्त्रिकदेवतः ॥ सिद्धिमुद्रा
 मुद्रावेवम ॥ नष्टमुद्रा विद्वन्मन्त्रिकदेवतः ॥ सिद्धिमुद्रा

हिं
०-

मृदुलक २५० एवेग ॥ मृगष्टमभन ५०
एवेग ॥ रिपेनिनमः ॥ वधनयेः ॥ रि
पेयं ५० ॥ विष्णुधिः ॥ ५ लहृल्लवडा ॥ मृ
धुल्लः ॥ मृगिउधरः ॥ उगकठवल ॥ पेकगेवी
॥ कउमक्तिः ॥ कृपमुहं ॥ ५ लभपमसु ॥ व
नदहृगुमदहृ ५० एवेग ॥ रिपेयंन कहृउ ॥

मृधुलिष्टुमिवमत्रिणे मृधुवधगल्लयेम
मृधुकममाये मधुधियेवधमृधुमृधुमृधु
ल्लयः येममवधयमिष्टुतेष्टुममपरे ये
गिनीनगृहृमृधुमृधुगिगल्लुधु गल्लमेव
मृधुवधगल्लेककिवगधुमृधुमृधुमृधुमृधु
कैलमृधुनिलयमृधु विष्टुगमृधुमृधुमृधुमृधु

[illegible]

जिम्मी
००

धृगः॥ गजवल्ः॥ संकरीवीलं॥ भगधृगीमक्तिः
 मरुमुदभा॥ गेसुपेभापभुम्॥ गेदहृमीद
 हृपदंष्टयेत्र॥ जिउंनैनमः॥ १००३ ॥ १०-॥
 जिमेसं ५०५॥ नगयलपधि॥ प्रधाम्वत॥ रि
 धृधृनः॥ धृगितधृगः॥ सुभंवल्ः॥ संकरीवी
 लभा॥ वैधृवीमक्तिः॥ वज्रदं॥ हृपकल्ल

उवधमक्रुद्धः भंवद्गमायेनमकेलनकड
 भल्लयः लपामगमिवसैवडे रभिवमीमिडले
 पिपेनकसुडिलेज्मा भचासभ्रमभल्लष्टभु ॥
 धृमभुहृधृभुभतालंकेयभुहृधृचडः ॥ १०५॥
 निकलेकेमेराज्जुभाहृकगलः भिडुलक्रीधृ
 हृयैमेवभृधृउडेधृगे भिभभासेभभायेमयेमभ

भक्त॥ श्रीदृष्टगोदृष्टपदंष्टये॥ तिस्रं नमः

मुनये ॥ १००॥ तिस्रं वंष्टये॥ सङ्गिभमपिः

मैश्वर्यं॥ सिवेष्टये॥ लङ्गरीष्टये॥ १००॥

लङ्गरीष्टये॥ मुलावतः॥ सुं कंरीष्टये॥ वि

मलामक्तिः॥ देमष्टये॥ मकंष्टये॥ गुदष्टये

पदंष्टये॥ तिस्रं वं नमः॥ ॥ १०१॥

दक्षप्रिनी उपिष्टयकभवेष्टये॥ तिस्रं वंष्टये॥

दिभालयेयेमनागाङ्गलनागासिवलयः विष्टये

भक्तष्टये॥ येष्टये॥ येष्टये॥ येष्टये॥ येष्टये॥

उष्टये॥ उष्टये॥ उष्टये॥ उष्टये॥ उष्टये॥

वृष्टये॥ वृष्टये॥ वृष्टये॥ वृष्टये॥ वृष्टये॥

भाउलमंष्टये॥ एकेष्टये॥ एकेष्टये॥ एकेष्टये॥

उत्तरी
०३

॥ त्रिकंष्ट्रं पंडित ॥ यमपतिः ॥ ब्रह्मा नवतः ॥ म
 तिलगतिस्तुतः ॥ पल्लवस्तुतः ॥ पीतवतः क
 कर्तव्यं ॥ एपि नीमतिः ॥ उपपुत्रं ॥ य
 मपानमुक्त ॥ मानमेव पथ पदं एवेत
 ॥ त्रिकंष्ट्रं नमः कर्तुं ॥ ०३ ॥ त्रिकंष्ट्रं पंडित
 सुपुत्रपतिः ॥ वमनं वेवतः ॥ साकरी

ध्यायेत मानकपिलं चैव भुवनं भुमीलिक
 भुगतिकभवेवस्तुतः उपपुत्रं मानमुलावायति
 कामयोगिनः भवेपवाभितयेमते विप्राकृत्य
 उक्तयेमगदमाप्रुतामयः भिन्नगराष्ट्रपमस्तु
 उषमिनभक्तिए पदनेगभक्तयेते त्रिभिय
 सुतवाकीएधदुमस्त्रियमस्तुये मउधमस्त्रिय

120

पिम्मा
०३

करीवीरं॥ उमेनयीसक्तिः॥ पारुमुदंभा म
मुपभृत्॥ प्रवल् मयत पापापदेष्टुयेत
रिष्टेभनमः॥ उलनि ॥ ०५॥॥ रिष्टुदिष्टुष्टु॥
कटायनपि॥ मेमेरेवत्॥ मुट्टुष्टुः॥ उ
मुट्टुष्टुः॥ मष्टुष्टुः॥ उकरेवीरं॥ दि
ष्टुष्टुः॥ मष्टुष्टुः॥ मष्टुष्टुः॥ मष्टुष्टुः॥

मधपापापदंष्टयेज ॥ रिउंदिनाः ॥ नभायू ॥ ०७ ॥
 रिपंठिं उहृष्ट ॥ वदयेतिटपिः ॥ अस्ति
 रमलेवज ॥ अतिदधिसूनुः ॥ अतिउष्टाः ॥ ५
 उवल् ॥ पकउरी ॥ अकसक्तिः ॥ वृत्तं ॥ ५
 धिकभू ॥ अतिदष्टातिगुदेवृवपापापदं
 ष्टयेज ॥ रिपंठिनाः ॥ नदये ॥ ०१ ॥ ॥ रि

योभक्तस्तुतिनिवाधिरुले मेवस्त्वैध्वयै
 मयस्त्वैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयै
 हृत्तिरुपनिष्ठास्त्वैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयै
 वैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयै
 उष्टये ध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयै
 ध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयैध्वयै

श्री ५
०४

॥८०॥ ये ये ॐ ह्रीं ॥ परमपतिः विष्णुर्विवस्वता
 चतुर्भुजः ॥ मन्त्रमुमुक्षुः ॥ गङ्गादलकेवत्तः
 यकरोवीरं ॥ विष्णुर्देविमक्तिः ॥ मन्त्रमुमुक्षुः ॥ भी
 नभक्तुः ॥ भवपतिर्विष्णुः ॥ यथायथं हृदये
 स्थित्येव नमः ॥ ह्रीं नमः ॥ ॐ ॥ विष्णुर्विवस्वता
 ॥ विष्णुर्विवस्वता ॥ मन्त्रमुमुक्षुः ॥

नियमयेभिरुभवेवैभक्तुर्विष्णुः येन भुव
 मिव लक्षणभक्तुर्विष्णुः भवपतिर्विष्णुः
 उद्भूतुभक्तुर्विष्णुः ॥ विष्णुर्विवस्वता ॥

त्रिभुक्तिस्तुतः॥ उरुतुष्टः॥ रज्जुकेवल॥ रकौवी
 लं॥ राय मक्तिः॥ सिद्ध सुदं॥ कृम भक्त॥ भवपा
 थापदंष्ट्र येज॥ विरंचेनमः॥ ललाटे॥ ७॥
 विलेनं नमः॥ उरुतुष्ट॥ मस्तुष्टिः॥ पूर्यति केवल
 पूर्यतिस्तुतः॥ सुगितुष्टः॥ भूदेव्य केवल॥ ल
 कौवीलं॥ वादी मक्तिः॥ पूर्य सुदं॥ वाद

श्री
०५

भक्त॥ देवयन्त्र प्रपकंष्टयेत् ॥ तिलेन नमः ५
चम्पु १९॥ ॥ त्रिवेष्टं ३३ ॥ मन्त्रलिपिउटधिः
भवेदेवदेवता ॥ मन्त्रिदतिष्ठतः ॥ मन्त्रमुत्तु
१ः ॥ नीलेदुलादेवतः ॥ वक्त्रेविलि ॥ यन्त्रलया
मन्त्रिः ॥ मन्त्रमुत्तु ॥ मन्त्रमुत्तु ॥ गेम्पयन्त्र
प्रपकंष्टयेत् ॥ त्रिवेष्टं नमः रुक्मि ७३॥ १०॥

सिमंसेष्टु ॥ मकिटपिः ॥ रुमेरुवडा ॥ विवडि
सुत्रः ॥ उरुडुधरः ॥ गेरेमना केवलः ॥ मकगेवीरं ॥
वापसजिः ॥ भदमुदं ॥ भदरुडुभद ॥ विधु
परुपयकंएयेडा ॥ सिमंसेनमः ॥ पसिभाष्ट ॥ १३ ॥
सिमंसेष्टु ॥ गेरेमना केवलः ॥ रुमेरुवडा ॥ महुडि
सुत्रः ॥ उरुडुधरः ॥ सुलावलः ॥ मकगेवीरं

सिंही
०

मेरुनामजिः॥ अदङ्गुगुं॥ भङ्गुगुं॥ वङ्गु
रुपकेष्टयेग॥ सिमेरुनमः उतुगुं॥ १७॥
उदंयागुं॥ मङ्गुगुं॥ मङ्गुगुं॥ मङ्गुगुं॥
भुङ्गुगुं॥ उतुगुं॥ मङ्गुगुं॥ मङ्गुगुं॥
लमुगुं॥ दङ्गुगुं॥ वङ्गुगुं॥ गु
मङ्गुगुं॥ पङ्गुगुं॥ वङ्गुगुं॥

५६ कल्लेष्ट येन वैजं भुवः प्रियं यन्मृगं ॥
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ ३५ ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै

त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै
 त्रिदं यत् नमः ॥ कृचै ॥ त्रिदं विदं नमः ॥ कृचै

७१
 ७१

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विदुषा चनेकलालितपा
 पभासुयंदगुमेधभउभासा
 वयः ३ पदेविवरिगुणि
 शिरकीडिनेनपापेप्रभुति
 दकेरुगिउनेन महुविनष्ट
 रिपनासुयभेभुवेनभासीभउ
 कषयउनेनवेतिगः २ ४
 गउष्टयनदुष्टापिपादमपी
 यडाः महुणनधुप्रयउभचपा
 पादुमेधउः ५ येभनवविग

७१

३५

पंजी-
७

ਤਿਥੀ ੭

[illegible]

भनसमिधु श्री श्री दिधुः ॥ भग जोग्य धार
 उदभेउदभकु सुमः ॥ पल्लमसु पल्लम
 लपिः ॥ पूर पतिग दीउय ॥ दय भनेगु
 मि पूरहः ॥ १ ॥ सुयष्टसु ॥ विष्टसु सुष्टमक
 वैष्टसु मेवद सुकष्टे ॥ गतीवद्वी ॥ लगह
 पमो भमो मो भकुः ॥ सुकुष्टुमः ॥ भय

उगपापाएवगयनेभग
 केभउभगति एनेउतदकि
 लिधमेउतभेभउः पयेणरभे
 नभनः पिवति २ सु
 मेयमु मेपीउकेमेयव
 सुमीवद्वद्वकेभुकेह भिउहम
 पट्टेपेउपुगीकयकविह
 यकेभवलेकेकनयम १
 ही मे उ म ललेयभय
 भयगयगयविध केहपि

पि० ५

०३

रुमकैरुपंरुममपि० ॥ पूरपडिगदीउय
द्वयमकनद्रुमि पूरहः ॥ उरुभडाडु
पूयुमैरु जो० ॥ गोव जो० ॥ मरुकेरुपुथा ॥ म
रुपुपुः ॥ मरुमैरु कं घी ॥ भक्तिन एकविंम
एकवि जो० ॥ मरुमैरु गो विममि० ॥ पू
रपडिगदीउय ॥ द्वयमैरुद्रुमि पूरहः

लविपुप्रतिन भभडुपेनव
गदरुपि० उमभयंरुकेगवपु
भीरुडा उ च
कामिभभकेभनउमयंरुवि
रुकेविउरुउरुवनमा इलेरुवि
भुगविमभगनंदरिपुपत्रेभि
गरिभदरुनभा ॥ ३ नरु

पं
नी
३

यदिगभनभपअरुलप
मरुउरुव रुदिगअलविनी
नेरुयउपतिकीरे निमिम

॥ जेय मयति मति मुष्टैवा कृष्टद भति वाष्ट ॥ पतिवै
 भेती ये कुं नि य नवतः ॥ मग्नयः ॥ मग्नयः
 रि न व इ य भि ॥ जां ॥ सो रि न व इ य भि ॥ जां ॥
 माह ॥ जां ॥ मा कर गै वत ॥ वि मु क म प विः पूर
 ॥ पति म दी तया ॥ इ य व म कृ ड मि पूर ह ले
 क ड उ कु मा ॥ जे डि पू न पू डि पू म इः ॥ ॥

उभ पि ग व ए य ते म त ग द म
 म ठ व ड क रि भ के म वी क रि के
 भ द रे उ भ य ए वा
 द भु वि भे र मि उ ते ए मः ॥ ॥
 मं ये पि जे व रि उ हे पि म उ ते न भः
 ल नि दि धा यं यं ये नि व ए भु द
 म उ भु उ भु र मी के म कृ पि ठ
 जि म क भु मे ०१ ०२
 य इ य र हि ए ये य य

॥ गायत्री सुक्तं ॥ गिरिं वन्द्युः ॥
 चिकर प्रचमसुद ॥ कुर्वः सुः उतः परं ग
 यत्री पूजवसुते ॥ ॥ योऽवमसुद ॥

म्री. १-
१-
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पंजी- ३०५ धामर नमिनमः
+ करवभनयनगयत्रयमिडवि

विसृज्य ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥ ॥ ॥ तिसृष्टुमी
 गायत्री साधनेन न भवति ॥ विमल पथिः ॥ ग
 यत्र सुखः ॥ पश्यन् पश्यन् मितुं न वेत् ॥ स
 धमेकं विनियोगः ॥ तिसृष्टुमी पश्यन्ति
 गच्छन्ति तिसृष्टुमीः ॥ तिसृष्टुमी पश्यन्ति
 सच तिसृष्टुमी पश्यन्ति ॥ तिसृष्टुमी पश्यन्ति

इत्यथ श्रीसूक्तमन्त्रमिगम
 गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥
 गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥
 गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥
 गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥
 गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥
 गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥
 गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥
 गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥ गायत्रीष्टवेत् ॥

३०

वय हयः चयवा ॥ त्रिवं यं ॥ त्रिपं
 राणभुभावमेभा ॥ उद्धीलनेलीवनं ॥ जे
 उं पिल्ले साधमेसनभा ॥ कुमकुल' मपु मं ॥ मि
 कुप्रलगतः यगभा ॥ राधतुमभुं रं ॥ सु
 हासुपाभेसुगि ॥ १ ॥ त्रिमेव ॥ त्रिउडु विउवगं
 कनेपीमदि पियेयेनः ५ ॥ मेरुय' ॥ त्रिउडि

सी ५

१०

मेवमवेमभवभवे ॥ १ ॥ चरु
 उवग चदेरुगुभदेरुगुनक
 गोपश्लोकभभा यमिउंयभा
 नमं प्रलुङ्गभनउतभा ॥ १ ॥ कु
 देणउवग गेकेरिगनेगुदल
 धकलेयगगापुदककलव
 भः यहुयउंभेभुवल्गनगेवि
 दनभभरलेनउतभा ॥ १ ॥ कु
 गगादउवग दगिदगतिपभा

पंगी
 ५

उड्डीलनभा ॥ तिस्रसमस्तीवनभा ॥ तिठजे
 तित्तविउचरेष्ट स्वष्टीमदिणियेयेनः ५०
 मयात्र तित्तमस्तीवनभा ॥ म्रपउतेष्ट
 तिव्रद ॥ ३ ॥ उति तित्त ॥ म्रपसापमेमना
 ॥ तिस्रिद्विद्वि सापमेमयसुद ॥ उति
 सापमेमना ॥ म्रपकुरुकुरु ॥ तिकुरुवः

निडधुमिडेरपिभुतः अनि
 सुयापिभुदधेददेवपिप
 वकः अनिभद्वयम नदेवद
 भिनमल्लभिनमिनुयभिनद्वे
 भगभिनठलभिनमसुयभि
 भद्वद्वदीयमग ७ भुणभम
 रेल्लसीनीनिवभभनधेडभ
 केदिभेकभा ३० केमवडव
 म भुद्वदीमिभनलः भुयभ
 नभद्वद्वभभकुरुनगभिन

श्री ५
३३

पंजी.

मेरुयात्र ॥ रि ००३ ॥ ॐ ति मिहृग्रले ॥ ५
 सुहृग्रले ॥ पू मेरुयात्रुहृग्रले ठनेरु
 वष्टुपीमदि पिथेयेनः ॥ उडेपगं रापडा
 पगमिहृग्रले ॥ पगवीले ॥ पसुहृग्रले येन
 तिसुगसुवामेरुवि ॥ तिकगं प्रचमसु ॥
 तिकुहृवः सुः ॥ उमे विहृग्रले ठनेरु वष्टु पीमदि

मसुकरुलमिहृमप्रकठगमहृ
 कनमभामगुदाधाय हृहृहृ
 सुपिगगकहृहृहृहृहृहृहृ ॥ ति
 मंभुलिकनम ॥ नग उ म
 सुदेदिगगयलमममममभृ
 ममभृममममः सुहृहृपे
 एगडेनगं उभामदेष्टुउठव
 मि ॥ १० ह्यमदः । वभृमेव
 भृयेठजः मभृभृहृमममः
 उधंमभृमभेदेष्टुएलमनिल

श्री

३३

पियेयेनः॥५॥मैरुयाज॥ सि०तिभरुः॥उरुम्
उधिः॥गयरीमुक्तः॥विष्णुदेवता॥रवीष्टं पी
सक्तिः॥मै०तिकीलकभा॥भैरुः॥विनियोगः

स०॥पी०मै०मेदभक्त्यांष्ट्रि०॥गङ्गाष्ट्रि०गङ्गामि
वः॥मङ्गाष्ट्रि०गङ्गामिदः॥मचष्ट्रि०गङ्गामिद

भा॥~~विष्णुदेवता॥गङ्गाष्ट्रि०गङ्गामिदः॥~~

इति ३३ मन्त्रावली चामुनीप्रथम
सुमंथावलीमन्त्रावली येनमन्त्रावली
विष्णुदेवताविष्णुदेवता ३३ दक्षिण
दक्षिणमन्त्रावलीगङ्गाष्ट्रि०मन्त्रावली
रुक्मिणीमन्त्रावलीगङ्गाष्ट्रि०मन्त्रावली ३२ द
क्षिणमन्त्रावलीगङ्गाष्ट्रि०मन्त्रावली
गङ्गाष्ट्रि०मन्त्रावलीगङ्गाष्ट्रि०मन्त्रावली
दक्षिण ३५ दक्षिणमन्त्रावलीगङ्गाष्ट्रि०
कलेणामन्त्रावलीविष्णुदेवताविष्णुदेवता
चामुनीमन्त्रावलीगङ्गाष्ट्रि०मन्त्रावली
विष्णुदेवताविष्णुदेवता ३३ दक्षिण

गङ्गा

१

卷之五

दी
३२

ययवः॥ दगेमिपाधनं न विस्मि संप्रदयनमः
 ॐतिप्रः॥ विमुवा यवयावायव्यायवे च
 ययवः॥ उरुजेमि पाधनं न विस्मि लीप्रदय
 नमः॥ ॐतिमहः॥ विमुवा यवयावायव्याय
 वे च ययवः॥ संविमि पाधनं न विस्मि/भेः
 ।प्रदयनमः॥ ॐतिमायम॥ विकाशुं दे

ममपुत्रा गेविमगेविमभक्त
 मरुगोविमगेविमभक्तभक्त २
 मरुगः मरुगभक्तभक्तभक्तभक्त
 मरुगभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त
 मरुगभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त १० मरुगभक्त
 गेविमभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त
 उमभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त
 मःमभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त
 भक्तिभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त
 मरुगभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त ३ मरुग
 भक्तिभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त ॥ ॥

पंगी
३

निहं विह्वलीनमेठिडा॥भुनीनभउरीऐन॥म
 पभेकेरुवेइयि ॥ डिमदेरुविभदरुवि॥रुवि
 मिह्वभउरी॥मल्लरुमभउरी॥वमिधुमाप
 मेमिडा॥विममिह्वपिः॥गयडीसुठः वि
 धुपथि॥सुठः॥मविउरुवरु॥मपेसुगी
 विनियोगः॥विह्व॥पिः॥मविउरी॥रुके

भउमकलकलरुएनयइएय
 उ भउपुंउभएनयइएभिसरुं
 दीभ २२ यइभउपः यइमान
 उगेविह्वभउवभउकेमव रुसु
 विह्वलीकेमवभउवभउमेभुउ
 नगयः नगयः॥उभउमि
 वगभिवमवडिनी उमपिनर
 केपेपउडीउडुउभा २०
 दीमवग भउसुठिउयेनद
 विह्वकरइयभा नहुभरिकर

२५

दत्तपुत्र मित्रः ॥ अमेव यमुगठं ॥ कृष्णये नि
 भामये ॥ ॐ ति मयि सुतः ॥ ॐ ति येरुः ॥ दिग
 गठः ॥ ॐ ति यष्टु वेठः १ ॥ अष्टा यष्टु मा भवे
 ॥ ३ ॥ अष्टा यष्टु मा भवे ॥ गायत्री विमुठे
 धरुभा ॥ विमय मे नं दृष्ट ॥ यष्टा मुं विपरी
 उन ॥ अष्टववेरुः ॥ अष्टा मुं विपरी

मी
 ३१

भुम्भिका यगभनं प्रति ॥ १ ॥ नमो भू
 यावती मज्जि पापनिद्रा लोदरेः
 उवदुर्गमं मज्जि पापनिद्रा लोदरेः
 नः ॥ ३ ॥ उवदुर्गमं मज्जि पापनिद्रा लोदरेः
 नेविष्टेति शिरकाभ भर
 इष्टा गिउं येन उवदुर्गमं मज्जि पापनिद्रा लोदरेः १७
 यमउवग नरके पय भानभूय
 मेन पतिरुधउभा किं उय नति
 उदेवः केमवः केमवः केमवः ५
 वेष्टु भउवग सुतेष्टु भवमा
 भुल्लिविमा दयभनः

पंगी
 ७

